ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र






वर्ष 46 | अंक 33 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 17 जुलाई, 2023 से रविवार 23 जुलाई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh |


# 45 वर्षों बाद दिल्ली में आई रिकार्ड तोड़ भयंकर बाढ़

# दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बाढ़ प्रभावित बस्तियों में राहत बचाव अभियान जोरों पर

## मजनूं का टीला, सिग्नेचर ब्रिज, प्रगति मैदान, पुस्ता, अक्षरधाम आदि स्थानों पर

### जेबीएम एवं नील फाउंडेसन के सहयोग से हजारों लोगों को तीनों समय का भोजन और पानी का किया जा रहा वितरण

### आर्यसमाज दीवान हाल में निरंतर बनाया जा रहा है- भोजन

## महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को प्रदान किए गए मौसम अनुकूल वस्त्र एवं बिस्तर

## आर्यवीर दल एवं दयानंद सेवाश्रम संघ के कार्यकर्त्ताओं का योगदान प्रशंसनीय



### प्राकृतिक अपदाओं में मावनसेवा आर्य समाज की प्राथमिकता

**–सुरेन्द्र कुमार आर्य**

भारत के किसी भी कोने में जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आई तो आर्य समाज हमेशा राहत बचाव के लिए सबसे पहले आगे आया। क्योंकि मानवता की रक्षा और सेवा करना आर्य समाज का पुराना इतिहास रहा है। आर्य समाज का नेतृत्व यह भली भांति जानता है कि जब कोई आपदा मुसीबत बनकर आती है तो उससे केवल जान माल का ही नुकसान नहीं होता बल्कि और भी बहुत-से आघात दिलों में गहरे जख्म छोड़ जाते हैं, जिनके ठीक होने में लंबा समय गुजर जाता है। अभी पिछले दिनों लोगों को तबाह कर दिया, घरों, दफ्तरों और मार्किटों को पानी-पानी कर दिया। लोग भोजन, पानी और अन्य मूलभूत सुविधाओं से बेहाल हो गए तो बिना देर किए तुरंत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सेवा सहायता के लिए जरूरी कदम उठाए गए।





### बाढ़ पीड़ितो के लिए राहत बचाव जोरों पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के शीर्ष नेतृत्व ने आनन-फानन में बाढ़पीड़ितों के सेवा सहयोग के लिए इधर आर्य समाज की रसोई, आर्य समाज रानी बाग और आर्य समाज दीवान हाल में आरंभ करके बाढ़पीड़ितों के लिए भोजन का प्रबंध शुरु किया, वहीं आर्य समाज का सेवा दल बाढ़पीड़ितों की आवश्यकताओं का निरीक्षण करने के लिए तत्पर हो गया। मजनूं का टीला, सिग्नेचर ब्रिज, प्रगति मैदान, पुस्ता, खजूरी खास और अक्षरधाम इत्यादि विभिन्न स्थानों पर

- शेष पृष्ठ 4 पर

*भोजन सामग्री, पैकिंग, पानी के बीच से भोजन लेकर जाते हुए कार्यकर्त्ता, सभा महामंत्री एवं श्री जोगेन्द्र खट्टर जी तथा आर्यवीरों से भोजन प्राप्त करते हुए बाढ़ पीड़ित।*

जब कोरोना महामारी आई तब कितने भाई-बहन बिछड़े, कितनी माताओं की गोद उजड़ गई, कितनी महिलाओं की मांग सूनी हो गई, कितने बच्चे अनाथ हो गए। ऐसी विषम परिस्थिति में कि जब अपने ही अपनों का अंतिम संस्कार करने से बच रहे थे। ऐसे कठिन समय में मानवता की रक्षा करना एक यक्ष प्रश्न था, जिसका समाधान आर्य समाज के रणबांकुरों ने अपनी जान की बाजी लगाकर यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी हालत में बेबसी के आंसुओं को अपनी अंगुलियों से पोंछना, असहनीय दु:ख की घड़ी में रोते बिलखते लोगों को देखकर मुंह नहीं फेरना बल्कि आगे बढ़कर उनकी हौसला और हिम्मत बनना, मानवता की सच्ची मिसाल कायम करना है।

### यमुना किनारे बसे लोग हुए बेहाल

आपदाओं के इस दौर में जब दिल्ली में यमुना की अथाह जलराशि ने भयंकर बाढ का रूप धारण किया और देखते ही देखते अपने दोनों किनारों को तोड़कर झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले

**बाढ़ पीड़ितों के लिए सहयोगी दानदाताओं से निवेदन है कि पेज न. 8 पर दी गई अपील का अवलोकन करें।**

## वेदवाणी-संस्कृत

# उचित काल की महती महिमा

## वेद-स्वाध्याय

**काले तपः काले ज्येष्ठ काले ब्रह्म समाहितम्।**
**कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः॥**
-अथर्व० 19 । 53 । 8
**ऋषिः- भृगुः ॥ देवता-कालः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥**

**शब्दार्थ**- **काले**=काल में, उचित काल में **तपः**=तप, **काले**=काल में **ज्येष्ठम्**=ज्येष्ठत्व और **काले**=काल मे ही **ब्रह्म**=ज्ञान **समाहितम्**=रखा हुआ है। **ह**=निश्चय से **कालः**=काल **सर्वस्य**=सबका **ईश्वरः**=ईश्वर है **यः**=जोकि **प्रजापतेः**=सब प्रजा के उत्पादक हिरण्यगर्भ का भी **पिता**=उत्पादक **आसीत्**=होता है।

**विनय**- प्रत्येक वस्तु अपने काल में ही होती है। जिस कार्य का, जिस बात का उचित काल नहीं आया है उसके लिए यत्न करना, उसकी आशा करना निरर्थक होता है, मूर्खतापूर्ण होता है, अतः हमें अपना प्रत्येक कार्य उचित काल में ही करना चाहिए। हमें तप करना हो, ज्येष्ठत्व पाना हो या ज्ञान प्राप्त करना हो, चाहे कुछ करना हो, यह सब हमें कालानुसार ही करना चाहिए। देखो, परमेश्वर भी अपना सब-कुछ नियत काल में करते हैं। वे समयपालन में भी परम हैं, परिपूर्ण हैं। वे इस जगत् की उत्पत्ति के लिए अपना ज्ञानमय तप बिलकुल नियत काल में करते हैं, ज्येष्ठ हिरण्यगर्भ को नियत काल पर प्रादुर्भूत करते हैं और ब्रह्म (वेद) का प्रकाश भी सदा नियत काल आने पर करते हैं। कालरूप में ही ये भगवान् प्रजापति के भी पिता हैं। यह सब संसार बेशक सूर्यप्रजापति या हिरण्यगर्भ-प्रजापति से उत्पन्न हुआ है, किन्तु वे प्रजापति भी तो काल आने पर ही उत्पन्न हो सकते हैं, अतः उनके भी जनक ये काल परमेश्वर हैं और केवल सृष्टि की यह उत्पत्ति ही नहीं, किन्तु सृष्टि का प्रतिक्षण संचालन भी काल द्वारा ही हो रहा है। इस संसार का एक तिनका भी बिना काल आये नहीं हिल सकता। सचमुच काल ही सबका ईश्वर है। भूत का, भवत् का, भविष्यत् का सब ब्रह्माण्ड, इस ब्रह्माण्ड की सब अनगिनत वस्तुएं, काल में ही यथास्थान रखी हुई हैं। काल का अतिक्रमण कोई नहीं कर सकता, अतः आओ, हम भी उस कालदेव की उपासना करें, हम देखें कि आज से उनके प्रतिकूल हमारा कभी कोई आचरण न होने पाये और हमारा एक-एक कर्म, एक-एक चेष्टा उस कालदेव की अनुमति पाकर ही हुआ करे।

**-:साभार:- वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक** प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

## संपादकीय

### भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण

# आर्य समाज की ओर से इसरो के वैज्ञानिकों और देशवासियों को हार्दिक बधाई

संपूर्ण विश्व में भारत राष्ट्र की कीर्ति पताका को जमीन से आसमान, चांद तक पहुंचाने के लिए समर्पित 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 का 14 जुलाई 2023 को सफलता पूर्वक प्रक्षेपण कर दिया है। इस महान उपलब्धि के लिए आर्य समाज की ओर से सभी वैज्ञानिकों सहित भारतवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आज समस्त भारतवासी अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से सराबोर हैं, और क्यों न हों? जब भारत आगे बढ़ता है तो समझिए कि हर भारतीय उन्नति, प्रगति और सफलता के पथ पर बढ़ रहा है। चंद्रयान-3 के 14 जुलाई 2023 को सफल प्रक्षेपण से लेकर उसकी 40 दिवसीय यात्रा और 23 अगस्त 2023 को लक्ष्य पर सफलता पूर्वक स्थापना हेतु संपूर्ण आर्य जगत ईश्वर से प्रार्थना करता है।

**"भारत राष्ट्र की कीर्ति पताका को जमीन से आसमान, चांद तक पहुंचाने के लिए समर्पित 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 का 14 जुलाई 2023 को सफलता पूर्वक प्रक्षेपण कर दिया है। इस महान उपलब्धि के लिए आर्य समाज की ओर से सभी वैज्ञानिकों सहित भारतवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आज समस्त भारतवासी अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से सराबोर हैं, और क्यों न हों? जब भारत आगे बढ़ता है तो समझिए कि हर भारतीय उन्नति, प्रगति और सफलता के पथ पर बढ़ रहा है। चंद्रयान-3 के 14 जुलाई 2023 को सफल प्रक्षेपण से लेकर उसकी 40 दिवसीय यात्रा और 23 अगस्त 2023 को लक्ष्य पर सफलता पूर्वक स्थापना हेतु संपूर्ण आर्य जगत ईश्वर से प्रार्थना करता है।"**

वस्तुतः चंद्रयान के गौरवशाली मिशन के लिए भारत पिछले 20 वर्षों से लगातार प्रयासरत है। भारत की आन, बान और शान बढ़ाने के लिए 15 अगस्त 2003 को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चंद्रयान कार्यक्रम की घोषणा की थी और 22 अक्टूबर 2008 को चंद्रयान-1 ने श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरी, जबकि 8 नवंबर 2008 को चंद्रयान-1 ने प्रक्षेपवक्र पर स्थापित होने के लिए चंद्र स्थानांतरण परिपथ (लुनर ट्रांसफर ट्रेजेक्ट्री) में प्रवेश भी किया लेकिन 14 नवंबर 2008 को चंद्रयान-1 चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव के समीप दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। किंतु उसने चांद की सतह पर पानी के अणुओं की मौजूदगी की पुष्टि की थी।

28 अगस्त 2009 को इसरो के अनुसार चंद्रयान-1 कार्यक्रम की समाप्ति हुई थी। इसके बाद हमारे वैज्ञानिकों ने निरंतर उत्साह के साथ परिश्रम और पुरुषार्थ करके विश्व को यह संदेश दिया कोई लक्ष्य प्राप्त करना चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, अगर मन में लग्न है तो व्यक्ति गगन तक पहुंच ही जाता है। परिणाम स्वरूप 22 जुलाई 2019 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण किया गया और 20 अगस्त 2019 को चंद्रयान-2 अंतरिक्ष यान चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश कर गया, 2 सितंबर 2019 को चंद्रमा की ध्रुवीय कक्षा में चांद का चक्कर लगाते वक्त लैंडर 'विक्रम' अलग हो गया था लेकिन चांद की सतह से 2.1 किलोमीटर की ऊंचाई पर लैंडर का जमीनी स्टेशन से संपर्क टूट गया। इस सबके बावजूद हमारे वैज्ञानिकों ने हार नहीं मानी और वे लगातार अपने चंद्रयान-3 के मिशन में पूरी निष्ठा के साथ समर्पण भाव से संलग्न रहे। उस विपरीत स्थिति में भी वैज्ञानिकों की भावना यही थी-

**मत करना बात निराशा की,**
**जीवन संभल की आशा है।**
**कर्तव्य कर्म करते जाओ,**
**यही जीवन की परिभाषा है।।**

वेद के अनुसार **'ये नयन्ति परावतम्'** जो हमें निराशा के विचार नीचे की ओर लेकर जाएं उन्हें छोड़कर आगे बढ़ना ही मानव मात्र का परम कर्तव्य है। अतः हमारे वैज्ञानिकों ने वेद के संदेश को आत्मसात करते हुए 14 जुलाई 2023 को चंद्रयान-3 का श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से दूसरे लॉन्चपैड से सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। इसरो के अनुसार 23, 24 अगस्त 2023 को यह चांद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग कर स्थापित हो जाएगा। और इस तरह भारत का तिरंगा चांद पर भी फहर जाएगा और भारत राष्ट्र का नाम विश्व के उन चार देशों की सूची में अमेरिका, चीन और रूस के साथ सम्मिलित हो जाएगा।

इसरो के अनुसार चंद्रयान-3, चंद्रयान-2 का अनुवर्ती मिशन है, जो चंद्र सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और रोविंग की एंड-टू-एंड क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें लैंडर और रोवर विन्यास शामिल हैं। प्रणोदन मॉड्यूल 100 किमी चंद्र कक्षा तक लैंडर और रोवर विन्यास को ले जाएगा। प्रणोदन मॉड्यूल में चंद्र कक्षा से पृथ्वी के वर्णक्रमीय और ध्रुवीय मीट्रिक मापों का अध्ययन करने के लिए स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री ऑफ हैबिटेबल प्लैनेट अर्थ (एस.एच.ए.पी.ई.) नीतभार है।

**लैंडर नीतभार:** तापीय चालकता और तापमान को मापने के लिए चंद्र सतह तापभौतिकीय प्रयोग (चेस्ट); लैंडिंग साइट के आस-पास भूकंपीयता को मापने के लिए चंद्र भूकंपीय गतिविधि (आई.एल.एस.ए.) के लिए साधनभूत; प्लाज्मा घनत्व और इसकी विविधताओं का अनुमान लगाने के लिए लैंगमुइर जांच (एल.पी.)। नासा से एक निष्क्रिय लेजर रिट्रोरिफ्लेक्टर ऐरे को चंद्र लेजर रेंजिंग अध्ययनों के लिए समायोजित किया गया है।

**रोवर नीतभार:** लैंडिंग साइट के आस-पास मौलिक संरचना प्राप्त करने के लिए अल्फा कण एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (ए.पी.एक्स.एस.) और लेजर प्रेरित ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप (एल.आई.बी.एस.)।

चंद्रयान-3 में एक स्वदेशी लैंडर मॉड्यूल (एल.एम.), प्रोपल्शन मॉड्यूल (पी.एम.) और एक रोवर शामिल है, जिसका उद्देश्य अंतरग्रहीय मिशनों के लिए आवश्यक नई तकनीकों को विकसित और प्रदर्शित करना है। लैंडर के पास निर्दिष्ट चंद्र स्थल पर सॉफ्ट लैंड करने और रोवर को तैनात करने की क्षमता होगी जो इसकी गतिशीलता

- शेष पृष्ठ 7 पर

## साप्ताहिक स्वध्याय

# महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अमर जीवन दर्शन का साप्ताहिक स्वाध्याय

**शिवलिंग पर चूहों का कूदना हजारों लोग देखते हैं, परन्तु उसे एक साधारण घटना समझकर नजरंदाज कर जाते हैं। बहनें और सम्बन्धी किसके नहीं मरते? परन्तु वैराग्य सबको नहीं होता। छोटी-सी घटना से इतना बड़ा परिणाम निकालना हरेक बुद्धि के लिए सम्भव नहीं है, और असाधारण बुद्धि के लिए भी सदा छोटी बात से बड़ा परिणाम निकालना असम्भव है। एक फल को गिरते देखकर पृथिवी की आकर्षण शक्ति का अनुमान सब नहीं कर सकते, पोप की सवारी न जाने कितने पादरियों ने देखी होगी, परन्तु ईसाई धर्म में सुधार की इच्छा सबके हृदय में उत्पन्न नहीं हुई। विशेष प्रतिभाएं ही बिन्दु से विश्व का अनुमान कर सकती हैं।**

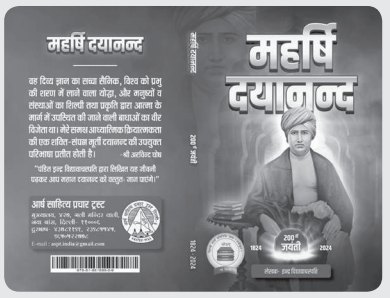


महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

### क्रमशः गतांक से आगे

दूसरी घटना का चरित नायक ने इस प्रकार वर्णन किया है- ''जब मेरी अवस्था 19 वर्ष की हुई, तब मुझसे अत्यन्त प्रेम करनेवाले जो बड़े धर्मात्मा तथा विद्वान् मेरे चाचा थे, उनको हैजे ने आ घेरा। मरते समय उन्होंने मुझे पास बुलाया। लोग उनकी नाड़ी देखने लगे। मैं भी पास ही बैठा हुआ था। मेरी ओर देखते ही उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। मुझे भी उस समय बहुत रोना आया, यहां तक कि रोते-रोते मेरी आंखें फूल गई। इतना रोना मुझे पहले कभी न आया था। उस दिन मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी चाचाजी के सदृश एक दिन मरने वाला हूं।'' तपे हुए लोहे पर चोट लगी। मूलशंकर का हृदय बहिन की मृत्यु के दृश्य से पहले ही नर्म हो चुका था, इस दूसरी चोट ने उसे पूरी तरह वैराग्य की ओर झुका दिया।

शिवलिंग पर चूहों का कूदना हजारों लोग देखते हैं, परन्तु उसे एक साधारण घटना समझकर नजरन्दाज कर जाते हैं। बहनें और सम्बन्धी किसके नहीं मरते ? परन्तु वैराग्य सबको नहीं होता। छोटी-सी घटना से इतना बड़ा परिणाम निकालना हरेक बुद्धि के लिए सम्भव नहीं है, और असाधारण बुद्धि के लिए भी सदा छोटी बात से बड़ा परिणाम निकालना असम्भव है। एक फल को गिरते देखकर पृथिवी की आकर्षण शक्ति का अनुमान सब नहीं कर सकते; पोप की सवारी न जाने कितने पादरियों ने देखी होगी, परन्तु ईसाई धर्म में सुधार की इच्छा सबके हृदय में उत्पन्न नहीं हुई। विशेष प्रतिभाएं ही बिन्दु से विश्व का अनुमान कर सकती हैं। परन्तु आश्चर्य यह है कि बहुत प्रचण्ड प्रतिभाएं भी हरेक विषय में या हर समय एक ही प्रकार से प्रभावित नहीं होतीं। बुद्धदेव ने रोगी या बूढ़ों को देखकर अमर होने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया, परन्तु बहुत-सी भौतिक घटनाएं देखकर भी वैज्ञानिक परीक्षण आरम्भ नहीं कर पाये। न्यूटन ने छोटी-सी बात से विज्ञान के बड़े-बड़े सिद्धान्त निकाल लिये, परन्तु बूढ़ों या मरतों को देखकर वैराग्यवान् नहीं हुए। यह विचित्रता पूर्व जन्म के संस्कारों को सिद्ध करती है। पूर्व संस्कार और अद्भुत प्रतिभा ये दोनों मिलकर संसार में आश्चर्यजनक कार्य कर सकते हैं। भगवान् के अभीष्ट बड़े-बड़े कार्य इन्हीं दो शक्तियों के मेल से हो सकते हैं। मूलशंकर में भी इन दोनों का समावेश था।

मूलशंकर के हृदय में यह विचार उत्पन्न होने लगा कि मुझे भी कभी मरना पड़ेगा, क्या इससे किसी प्रकार बच सकता हूं? वे विद्वानों और वृद्धों से अमर होने के उपाय पूछने लगे। जब उसके माता-पिता को यह पता लगा तो वे उसे बांधने के लिए विवाह कर देने का संकल्प दृढ़ करने लगे। विचारों का द्वन्द्व-युद्ध होने लगा। मूलशंकर ने इस कारागार से बचने के लिए कभी काशी जाने का प्रस्ताव किया और कभी पड़ोस में विद्याभ्यास सम्पन्न करने की बात उठाई। उसके माता-पिता वैराग्य से बहुत डरते थे, इस कारण उनकी ओर से विवाह की शीघ्रता होने लगी। ऐसी दशाओं में माता-पिता अपनी अधीरता से प्रायः अपना काम बिगाड़ लिया करते हैं। वे छूटने का यत्न करनेवाली सन्तान को यथाशीघ्र बांधने का प्रयत्न करते हैं। यह अधीरता प्रायः दुःखान्त सिद्ध होती है। मूलशंकर के माता-पिता ने भी अपनी अधीरता से बिगड़ते काम को शीघ्र से शीघ्रतर बिगाड़ दिया।

-क्रमशः अगले अंक में...

## स्वास्थ्य संदेश

# स्वस्थ जीवन, सुखी जीवन

***यह सर्वविदित है कि मनुष्य का शरीर पंच तत्वों से निर्मित हुआ है। ये पंचतत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश हैं। इन्हीं से हमारे शरीर का निर्माण संभव हुआ है और प्रकृति अपनी संरचना का उपचार भी स्वयं करती है। इसलिए अनेक चिकित्सा पद्धतियों में प्राकृतिक चिकित्सा एक प्रमुख चिकित्सा पद्धति है। स्वास्थ्य रक्षा के इस स्तंभ में हम प्राकृतिक चिकित्सा से जुड़ी हुई बातें सुझाव के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। जिससे लाभान्वित होकर आप स्वस्थ रहें और सुखी रहें।***

**पृथ्वीः–** स्वस्थ रहने के लिए पृथ्वी के संपर्क में रहना आवश्यक है। मिट्टी पर नंगे पैरों से चलकर अथवा ओस से भीगी हुई घास पर टहल कर पृथ्वी से संपर्क का लाभ उठाया जा सकता है। यदि संभव हो तो कभी-कभी मिट्टी या घर पर लेटा भी जा सकता है, यह शरीर की थकान को दूर कर स्फूर्तिवान बनाता है।

**जलः–** इसी तरह स्वस्थ रहने के लिए कुछ जल के भी महत्वपूर्ण प्रयोग है। प्रातःकाल उठ कर कम से कम 3 ग्लास पानी पीना चाहिए। पूरे दिन में कम से कम 3 लीटर पानी अवश्य पीए। प्रातःकाल स्वच्छ जल से स्नान करने से शरीर के समस्त रोम छिद्र खुल जाते हैं, इससे शरीर में हल्का पन और स्फूर्ति आती है तथा सभी मांसपेशियां और संस्थान सक्रिय एवं रक्त संचार उन्नत हो जाता है। स्नान करते समय साबुन के स्थान पर स्वच्छ चिकनी मिट्टी या मुल्तानी मिट्टी का भी प्रयोग किया जा सकता है। गर्मियों में सप्ताह में एक-दो रोज यह प्रयोग अवश्य करें। दूध बेसन का उबटन भी उपयोगी है। स्नान करने से पूर्व मोटे खुर्दरे तोलिए से शरीर को रगड़ने के बाद स्नान करना अधिक लाभदायक है। जब भी प्यास लगे तो प्यास बुझाने के लिए पानी पीना ही सर्वोत्कृष्ट है, पानी को एक साथ न पीकर घूंट-घूंट करके पीना चाहिए। यदि पानी की स्वच्छता में संदेह हो तो उसे उबालकर एवं छानकर पिएं। भोजन के साथ पानी न पीना श्रेयस्कर है। भोजन के आधा घंटे पहले एवं आधा घंटे के बाद पानी पीना चाहिए। बीच में आवश्यकता पड़ने पर एक दो घूंट पानी पी सकते हैं।

**अग्नि (धूप):–** सूर्य का प्रकाश भी स्वस्थ रहने के लिए अति आवश्यक है। हमारा घर ऐसा होना चाहिए जिसमें पर्याप्त सूर्य का प्रकाश आता हो। सूर्य की किरणें सात दृश्य तथा अन्य अदृश्य किरणों से बनी है। उनका अपना-अपना प्रभाव होता है। ये हमारे शरीर को विटामिन डी प्राप्त करने में अत्यंत सहायक है। प्रतिदिन प्रातःकाल हल्की धूप में खड़े होकर सूर्य की किरणों का सेवन करना चाहिए। इससे त्वचा जीवन एवं मन प्रफुल्लित होता है। सूर्य की किरणें शरीर को सक्रिय और संस्थानों को क्रियाशील बनाती है।

**वायुः–** अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ वायु अत्यंत आवश्यक है। हमें खुले वातावरण में रहकर शुद्ध वायु का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। हमारा घर ऐसा हो जिसमें निर्बाध रूप से वायु का प्रवेश हो, विशेषकर सोने का कमरा पर्याप्त हवादार हो, सोते समय खिड़कियां खुली रहनी चाहिए। जब भी संभव हो बाहर खुली हवा में सोने का प्रयास करना चाहिए। सूर्योदय के पूर्व उठकर खुली हवा में टहलना और गहरी सांस लेना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक है।

**आकाशः–** शरीर में आकाश का प्रतिनिधित्व उपवास द्वारा होता है। शरीर के संस्थानों का कार्य सुचारु रुप से चलें इसके लिए हमें सप्ताह में एक दिन उपवास या रस आहार अथवा फलाहार अवश्य करना चाहिए। उपवास, रस आहार, फलाहार में नींबू पानी और शहद या मौसम के ताजे रसदार फल दिन में तीन चार बार लिए जा सकते हैं। उपवास से मन को शांति मिलती है तथा शरीर के समस्त स्रोतों की शुद्धि हो जाती है। इससे पाचन संस्थान गतिशील हो जाता है।

पृष्ठ 1 का शेष

# बाढ़ प्रभावित बस्तियों में राहत बचाव अभियान

रहने वाले हजारों निर्धन लोगों को तीनों समय का शुद्ध, सात्विक भोजन और नाश्ता और लगातार 12 जुलाई 2023 से प्रदान किया जाने लगा जो कि अभी तक लगातार जारी है।

## घुटनों और कमर तक पानी के बीच पहुंचाया भोजन

यह सर्वविदित ही है कि दिल्ली 45 वर्षों बाद इतनी भयंकर बाढ़ का सामना कर रही है। जिसमें कि आधुनिक तकनीक के इस युग में बाढ़ग्रस्त लोगों को संभलने का मौका ही नहीं मिला और देखते ही देखते घरों में पानी भर गया, लोगों ने रेहड़ी, रिक्शा, टायर और थर्माकोल की नाव बनाकर अपना सामान लेकर भागने की कोशिश की। इनमें ज्यादातर लोग पानी से भरे घरों के बाहर आस-पास ऊंचे स्थानों पर जमे रहे और पानी के कम होने का इंतजार करते रहे। अब यहां पर समस्या यह भी थी कि भोजन और पानी की व्यवस्था कैसे होवे, तो ऐसी विकट स्थिति में आर्यवीर दल के समर्पित आर्यवीरों ने सिर और कंधों पर लादकर भोजन और पानी वितरित किया। ऐसी स्थिति में भोजन वितरण करना अत्यंत कठिन कार्य था लेकिन आर्यवीरों ने अदम्य साहस और सेवा संकल्प के साथ कार्य किया।

## सभा अधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन

**इस महत्वपूर्ण सेवा कार्य में समर्पित कार्यकर्ताओं को जहां एक तरफ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी का कुशल मार्गदर्शन लगातार प्राप्त होता रहा, वहीं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी की समर्पित सेवा भावना शक्ति देती रही, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, के प्रधान, महामंत्री और सभी अधिकारियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ, तो वहीं समस्त वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी और कार्यकर्ता भी बीच-बीच में बात करते रहे। दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी स्वयं आर्य वीरों के साथ बाढ़ पीड़ित बस्तियों में पहुंचे और स्वयं अपने हाथों से भोजन भी वितरित किया और सभी को हिम्मत और हौसला प्रदान करते हुए आर्य समाज द्वारा हर प्रकार की सहायता करने की बात कही। विनय आर्य जी को अपने बीच पाकर सभी कार्यकर्ता अत्यंत उत्साहित और समर्पित नजर आए। सभी ने और मजबूती के साथ सेवा कार्य करने का संकल्प लिया।**

## पाकिस्तानी हिन्दू शरणार्थियों की सेवा-सहायता

ज्ञात हो की आर्य समाज पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थियों के उत्थान के लिए पहले से ही लगातार कार्य करता आ रहा है। समय-समय पर पर्व त्यौहारों को इनके साथ मनाना, इनके बच्चों के जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, बच्चों के संस्कार वैदिक रीति से नि:शुल्क मनाना, और सुख-दुख में इनका सहयोग आर्य समाज करता रहा है। इस बीच चाहे सिगनेचर ब्रिज हो, मजनू का टीला या अन्य जगहों पर जहां पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थी रहते हैं वे सब आर्य समाज की सहायता की प्रतीक्षा कर रहे थे, इन सबकी जरुरतों का ध्यान रखते हुए आर्य समाज की ओर से भोजन-पानी की व्यवस्था सुचारू रूप से की गई। उन लोगों की दयनीय दशा देखकर ऐसा लगा मानो आज ये सब लोग जाएं तो जाएं कहां? अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए इन्होंने अपना घर बार छोड़ा और पाकिस्तान से भारत आ गये। यहां पर किसी तरह से झुग्गी झोपड़ी बनाकर गुजर बसर कर ही रहे थे कि यमुना का पानी एक आपदा बनकर इनको हिलाने लगा। इसके साथ ही हालात चाहे जैसे भी हों भोजन पानी तो सबको चाहिए ही। ऐसे में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने लगातार सुबह शाम उनको भोजन पानी और वस्त्र आदि देकर के सहायता की। इन सब ने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के प्रति इस आपदा में आभार व्यक्त किया।

## अक्षरधाम तक पहुंचे आर्य समाज के कार्यकर्ता

बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत बचाव कार्य करते हुए आर्य कार्यकर्ता अक्षरधाम मंदिर क्षेत्र तक पहुंचे, जहां पर जैसी आवश्यकता देखी उसी तरह से सेवा के हाथ आगे बढ़ाते गए, वहां पर भी अनेक लोग भोजन और पानी के लिए मोहताज दिखे, आर्य समाज ने इन सबके लिए भी तीनों समय का भोजन पहुंचाया और हर तरह की सेवा सहायता के की। सभी बाढ़ पीड़ितों को भोजन और पानी जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर हिम्मत हौसला बढ़ा और विशेष रूप से जो छोटे बच्चे और बुजुर्ग थे उन्होंने राहत की सांस ली। क्योंकि यह तो पुरानी कहावत है कि बिना भोजन के व्यक्ति का दिमाग और शरीर दोनों जवाब दे देते हैं ऐसे में आसमानी और जमीनी दोनों आपदाओं में आर्य समाज के सहयोग से लोगों को बहुत लाभ हुआ और सभी ने आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया

## बाढ़ पीड़ितों को वस्त्र और बिस्तर किए वितरित

आर्य समाज द्वारा दिल्ली के प्रगति मैदान के साथ बसी सेवा बस्ती में जहां भोजन और पानी प्रतिदिन तीनों समय वितरित किया जाता रहा, वहीं पर लोगों की आवश्यकताओं को देखते हुए वस्त्र और बिस्तरों के लिए चादर भी वितरित की गई। यहां पर रहने वाले लोगों का सामान बिस्तर आदि सब खराब हो गया था, इसलिए लोगों ने मांग की और आर्य समाज की ओर से हर आयु वर्ग के महिलाओं और पुरुषों को वस्त्र वितरित किए गए। ऐसी विपरीत स्थिति में अपना शरीर ढकने के लिए आवश्यकतानुसार वस्त्र और चादरें प्राप्त करके लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त की और आर्य समाज के सेवा कार्यों की सराहना की तथा महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति धन्यवाद किया। मौसम के अनुसार सुंदर वस्त्र पाकर बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं था।

# महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

## दयानंद भगवान को सहस्त्रों प्रणाम हैं– कवि अखिलेश मिश्र

(3)

जय भंजन-भव-भार-भूरि सज्जन-मन-रंजन।
जय गंजन-पाखण्ड, पाप-घन-पटल-प्रभंजन।।
सुद्ध-सान्त-निर्भ्रान्त-दान्त, निर्भीक-सुधारक।
जय प्रनतारति-हरन, दीन-भारत-उद्धारक।।
व्रत-ब्रह्मचर्य-पालक-प्रबल निगमागम-पटु,जुत-विरति।
मतिमान, ध्यान-रत ब्रह्मबर, दयानन्द स्वामी जयति।।

**शब्दार्थः–** भंजन-नाश, ध्वंस। भव-संसार, जन्ममरण का दुःख। भार-बोझ। रंजन-चित प्रसन्न करने की क्रया। गंजन-नाश। घन-बादल। पटल-समूह। प्रभंजन-वायु। दान्त-सयमी। निर्भीक-निडर। प्रनतारतिहरन-भक्त की पीड़ा हटाने वाले। पटु-निपुण। निगमागम-वेद शास्त्र। विरित-वैरागय।

**भावार्थः–** संसार के आवागमन विषयक दुःखों का नाश करने वाले तथा सज्जनों के मन को प्रसन्न करने वाले आप की जय हो। पाखण्ड को ध्वंस करने वाले, पाप रूपी बादल समूह को छिन्न-भिन्न करने के लिये वायु रूप! आपकी जय हो। आप शुद्ध, शान्त निर्भ्रम, संयमी और निडर सुधारक हैं। आप भक्त की पीड़ा हरने वाले और दीन भारतवर्ष का उद्धार करने वाले हैं; आपकी जय हो। आप ब्रह्मचर्य व्रत के बड़े जबर्दस्त पालक हैं और वेदशास्त्र-पारंगत वैराग्य से युक्त हैं। आप बुद्धिमान और परमात्मा के ध्यान में संलग्न हैं। आप की जय हो।

(4)

जयति निरासा-हरन, राष्ट्र-भाषा-उन्नायक।
जयति ऐक्य-आचार्य, आर्य-गौरव, बुध-नायक।।
रुढ़िवाद-रिपु-बिकट, मोह-निसि दरन-दिवाकर।
सुभट-समर-सास्त्रार्थ, तपोधन, सान्ति-सुधाकर।।
वर-धीर-वीर, छमता निलय, गुन सागर, नागर, सदय।
सुचि सत्य धाम, संकल्प ध्रुव, दयानन्द जोगीन्द्र जय।।

**शब्दार्थः–** निराशा-उदासीनता-ना उम्मेदी। राष्ट्र-भाषा-हिन्दी। उन्नायक-उन्नति करने वाले। ऐक्य-एकता। बुध-पंडित।। नायक-मुखिया। दिवाकर-सूर्य। सुभट-योद्धा। सुधाकर-चन्द्रमा। क्षमता-योग्यता, सामर्थ्य। निलय-घर। नागर-चतुय। सदय-दयालु। ध्रुव-दृढ़, पक्का।

**भावार्थः–** उदासीनता का नाश करने वाले तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति करने वाले आपकी जय हो। आप संगठन के आचार्य, हिन्दुओं के गौरव और पंडितों के मुखिया हो, आपकी जय हो। आप रुढ़ियों के विकट शत्रु एवम् मोह रूपी रात्रि को नष्ट करने के लिये देदीप्यमान सूर्य हो। आप शास्त्रार्थ संग्राम के योद्धा, तपस्वी तथा शांति के चन्द्रमा हो। आप धीर, वीर, योग्यता के घर, गुणों के समूह, चतुर दयालु, सत्यप्रतिज्ञ दृढ़संकल्प वाले हैं। हे योगीन्द्र दयानन्द! आपकी जय हो।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

# बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में अभी भी लगातार चल रहा है– सेवा का कार्य

बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में अब कोई बाढ़ का खतरा तो नहीं है। लेकिन जो लोग झुग्गी-झोपड़ियों से बाहर सड़कों पर या अस्थायी स्थानों पर लगे टेन्टों में रहने को मजबूर हैं, वहां अभी उनके खाने-पीने और रहने के साधन नहीं हैं। चारों तरफ पानी, मिट्टी, कीचड़ और गंदगी के ढेर हैं। वहां शुद्ध पानी और भोजन की अभी भी आवश्यकता है। इसलिए सभा द्वारा लगातार आठ दिनों के बाद भी निरंतर सेवा कार्य गतिशील है। आने वाले समय में आवश्यकतानुसार सभा द्वारा संचालित स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के अंतर्गत भी बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में स्वास्थ्य जांच सेवा कार्यो के संचालन की तैयारी पर भी विचार किया जा रहा है।

मजनूं का टीला, प्रगति मैदान, पुस्ता, सिग्नेचर ब्रिज और अक्षरधाम आदि विभिन्न बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में भोजन वितरण करते हुए आर्य कार्यकर्त्ता।


**For marriage**

Qualified employed match preferably working Gurgaon
For Arora boy 22.02.95, 2.00AM
Jalandar, HT 5'8" BTech Hons MTech with distinction from IIT Jodhpur presently posted Maruti Suzuki India Ltd.
PKG 15 Lac. Only merit will be given due consideration.
Contact WhatsApp 8360536336.

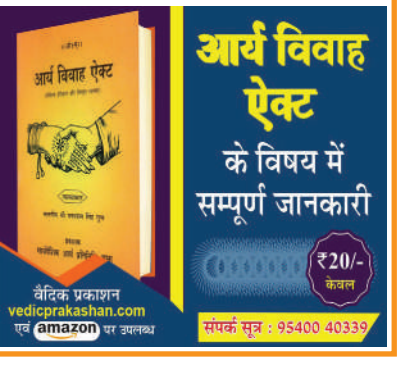

# In Search of Amrit

Now it was time (period) of great and critical test in the life of Mool Shankar. He was standing on the top of such a critical hill. On one side of the hill, there was downward Royal road and on the other side there were hills higher than the hill on which he was standing. A dense forest, thorny path and pointed stone could be seen there. It was very easy to move down the Royal road but there was risk of death by following the other side. Easy path leads to hell and surprisingly uncountable people are moving on that road. Where does the difficult path lead to? Is it the way to Heaven? Which path they should follow, many people walked some steps through the dense forest but returned back saying, "Leave this path. It is just a drama". Purpose and aim of following Royal path is quite clear, but following the other way is like 'Jumping in the Dark'. The believing people declare that there is Heaven on other side of the hills but no one has seen that. Aim is doubtful and the path is very dangerous! Can there be any problem more difficult than this?

But Mool Shankar did not remain much confused in this difficult path. He thought like this, "There is Royal road on one side, but it leads to suicide (death). It is quite definite. That path leads downwords. So this path is not to be followed definitely. There is possibility of safety so, possibility of safety is better than possibility of ruin" Thinking like this, he ignored completely the path leading to death (suicide) and got determined to search the path leading to salvation (Amaratva). When the parents were preparing atmosphere for his marriage, he understood that the door of the world was opened before him. This door attracts every young boy and girl towards it with great force. As some one steps the door, the back doors are closed automatically. There is no chance to return back. Daya Nanad observed that the entry door was opened., If I step in, heaven will remain just a dream. His feet would be chained definitely.

Having strong thirst for Amratva, Mool Shankar decided to leave loving home and easy royal road and followed the path of Dense forest at the age of 21. He left his home in an evening of Jyeshtha month.

Mool Shankar left his home in the month of Jyeshtha of 1902 Vikrami Samvat and reached Dandi Swami in Kartik month of 1917 Vikrami Samvat. He led life of a true saint for 15 years. He had no relation with his family at all. Once he participated in the function of Sidhpur some months after he left his home. His father came to know about his presence in Sidhpur. He reached Sidhpur with some police men. He arrested Mool Shankar with the help of police. Mool Shankar had no option other than feeling sorry and getting ready to go back to home with his father. The father started back for home with the son with the help of police. But Mool Shankar had decided to get rid of the police. He slipped away on one night when the police men were fast asleep. He passed next day hiding and sitting on a tree. The father was totally disappointed and left for his home alone. Mool Shankar also left for Mathura. After that incident he never met any of his family members.

Mool Shankar had only one aim before him, that was to know some way to get rid of Death' He was told that 'Yoga' was the only way to get rid of 'Death' So Mool Shankar strated visiting villages, cities and forests in search of a 'Yogi'. In the beginning as he was inexperienced some Robber Sadhus robbed him a lot. They robbed all his woollen clothes even. But with passage of time he started under standing difference between the robber Saints and real Saints. After he left his home, he visited the village 'Some'. There he got inspiration from a 'Brahmchari' as his 'Guru' and he was given the name 'Shudh Chetan Brahmchari' by his Guru. Then he started visiting sacred places as a 'Brahmchari'. During those days cooked food was not offered to Brahmcharis. Cooked food was given to Saints only in Gujrat. Brahmcharis were expected to cook food for themselves. So this routine of studies was disturbed. Then

*To be continued in next issue*

## आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

## आश्रम के भेद-यज्ञ-कर्म

**46-आश्रम के भेद**

उत्तम चिन्तन, त्याग, तप,
आत्मिक बल का हेतु ।
जीवन सागर का सुगम
वान प्रस्थ है, सेतु ।।60।।
तीन एषणा त्यागकर करे
सृष्टि का उपचार ।
यह आश्रम 'संन्यास' है
संस्कृति के अनुसार ।।61।।

**47-यज्ञ**

अग्निहोत्र प्रारम्भ से
अश्वमेघ-अवसान ।
शिल्पादिक व्यवहार में
जो पदार्थ-विज्ञान ।।62।।
जगती में उपकार के
जितने उत्तम कर्म ।
वही कहाते 'यज्ञ' हैं
वेदों का यह मर्म ।।63।।

**48-कर्म**

जो शरीर में साथ ले
मन इन्द्रिय का योग ।
जीवात्मा चेष्टा करे वही
'कर्म'-संयोग ।।64।।
शुभ-अशुभ या मिश्र हैं
उसके तीन प्रकार ।
भेद प्रकट करते यहां
मनुजों के व्यवहार ।।65।।

**साभार :**

**सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से**

प्रेरक प्रसंग

## गोलियों की दनादन में : प्राचार्य भगवानदास जी

क्रमशः गतांक से आगे

पुलिस को सन्देह था कि कॉलेज के प्रांगण में उपद्रवी युवक इकट्ठे हुए हैं। उधर छात्रों को यह पता लग गया कि पुलिस उन पर गोली वर्षा करने वाली है। डॉ. गोवर्धनलाल दत्त तब कॉलेज के प्राचार्य थे। कॉलेज के वीर छात्र मरने-मारने को तैयार हो गए।

जिसके सीने में स्वामी श्रद्धानन्द व लाला लाजपतराय का पवित्र रक्त उबल रहा था, वह भगवानदास सड़क के बीच खड़ा हो गया। लड़कों व पुलिस को समझाने लगा। थानेदारों में कई मित्र थे, परन्तु आज कोई भी उनकी न सुन रहा था। दनादन गोलियाँ चलने लगीं। विद्यार्थियों ने आत्मरक्षा में जबरदस्त पथराव किया। आर्यसमाज का अडियल योद्धा प्रो. भगवानदास गोलियों की दनादन में वहीं सड़क के बीच छाती ताने खड़ा था। भगवानदास अपने पिता का इकलौता लाल था, परन्तु लेखराम नर-नामी के बलिदान से अदम्य उत्साह पाकर आज वह भारत माता के लालों को बचाने के लिए वहीं डटा रहा। पुलिस कॉलेज में घुसना चाहती थी।

इतने में डॉ. गोवर्धनलाल दत्त प्राचार्य दयानन्द कॉलेज लाहौर, छात्रों की भीड़ को चीरता हुआ, हुँकारता और ललकारता हुआ प्रो. भगवानदास की ओर बढ़ा। 'गोलियों की बौछार में आप आगे मत बढ़ें'। भगवानदास की यह पुकार डॉ. दत्त ने अनसुनी कर दी।

डॉ. दत्त ने पुलिस को चेतावनी दी कि मेरी आज्ञा के बिना मेरे कॉलेज में कोई नहीं घुस सकता। बहुत से देशभक्त छात्रों की जानें इन दो महान् शिक्षा-शास्त्रियों के शौर्य से बच गईं। वीरों की छातियाँ तो गोलियों से छलनी हुई ही, डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर की दीवारों में भी गोलियों के निशान ऐसे ही देखे जा सकते थे जैसे जलियाँवाला बाग के पास के मकानों पर 1919 ई. में गड्ढे पड़ गए थे।

अट्ठाईस वर्ष पूर्व देहली के चाँदनीचौक में वृद्ध आर्यसंन्यासी स्वामी श्रद्धानन्दजी ने निर्दोष भारतीय जनता को गोली वर्षा से बचाने के लिए अपने सीने को ढाल बनाकर एक इतिहास बनाया था। उसी इतिहास की पुनरावृत्ति श्री भगवानदासजी ने लाहौर में करके दिखाई। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने देश व समाज के ऐसे इतिहास का स्मरण करके देश-जाति में नवजीवन का संचार करें। प्राचार्य भगवानदास के साथ अन्त में डी.ए.वी. वालों के क्या दुर्व्यवहार किया यह एक लज्जाजनक कहानी है।

**-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु**

**साभार :**

**तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी**

**तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

**अध्यापक चाहिए**

**श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा खुर्द में अध्यापकों की आवश्यकता है। संपर्क करें- 9350538952, 8800443826**

**हवन सामग्री**
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
**वैदिक साहित्य**
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

## निर्वाचन समाचार

### वेद प्रचार मंडल उत्तर पश्चिमी दिल्ली का निर्वाचन संपन्न

**श्री सुरेन्द्र आर्य– प्रधान**
**श्री जोगेन्द्र खट्टर– मंत्री**
**श्री व्रतपाल भगत– कोषाध्यक्ष**

16 जुलाई 2023 को आर्य समाज सरस्वती विहार में वेद प्रचार मण्डल उत्तर पश्चिमी दिल्ली का निर्वाचन श्री कृपाल सिंह जी, चुनाव अधिकारी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। श्री सुरेंद्र आर्य जी, प्रधान, श्री जगेंद खट्टर जी, महामंत्री एवं श्री व्रतपाल भगत जी, कोषाध्यक्ष चुने गए।

**आर्यसमाज मन्दिर धामावाला देहरादून-248001**
**प्रधान : श्री सुधीर गुलाटी**
**मंत्री : श्री नवीन भट्ट**
**कोषाध्यक्ष : श्री नारायण दत्त पांचाल**

### जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी–चंदौली का चुनाव संपन्न

**श्री प्रमोद आर्य 'आर्षेय'– प्रधान**
**श्री सत्येन्द्र आर्य– मंत्री**
**श्री शशिकान्त आर्य– कोषाध्यक्ष**

9 जुलाई 2023 को आर्य समाज भोजूबीर, वाराणसी में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी- चंदौली का वार्षिक चुनाव संपन्न हुआ। जिसमें श्री प्रमोद आर्य 'आर्षेय', प्रधान, श्री सत्येन्द्र आर्य, मंत्री, श्री शशिकान्त आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

**आर्यसमाज दिलशाद गार्डन, दिल्ली का चुनाव संपन्न**
**प्रधान : श्री सत्यपाल आरोड़ा**
**मंत्री : श्री अशोक सोनी**

**आर्यसमाज कोसी कला मथुरा**
**प्रधान : डॉ. अमर सिंह पौनिया**
**मंत्री : श्री नरेन्द्र कुमार**

**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से नवनिर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई।**

पृष्ठ 2 का शेष

के दौरान चंद्र सतह के इन-सीटू रासायनिक विश्लेषण करेगा। लैंडर और रोवर के पास चंद्र सतह पर प्रयोग करने के लिए वैज्ञानिक नीतभार हैं। पी.एम. का मुख्य कार्य एल.एम. को लॉन्च व्हीकल इंजेक्शन से अंतिम चंद्र 100 किमी गोलाकार ध्रुवीय कक्षा तक ले जाना और एल.एम. को पी.एम. से अलग करना है। इसके अलावा, प्रणोदन मॉड्यूल में मूल्यवर्धन के रूप में एक वैज्ञानिक नीतभार भी है जिसे लैंडर मॉड्यूल के अलग होने के बाद संचालित किया जाएगा। चंद्रयान-3 के लिए चिन्हित किया गया लॉन्चर एल.वी.एम.3 एम.4 है जो एकीकृत मॉड्यूल को 170X36500 किमी आकार के एलिप्टिक पार्किंग ऑर्बिट (ई.पी.ओ.) में स्थापित करेगा।

चंद्र सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग प्रदर्शित करना, रोवर को चंद्रमा पर भ्रमण का प्रदर्शन करना और यथास्थित वैज्ञानिक प्रयोग करना। मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए लैंडर में कई उन्नत प्रौद्योगिकियां मौजूद हैं जैसे, अल्टीमीटर: लेजर और आर.एफ. आधारित अल्टीमीटर, वेलोसीमीटर: लेजर डॉपलर वेलोसीमीटर और लैंडर हॉरिजॉन्टल वेलोसिटी कैमरा, जड़त्वीय मापन: लेजर गायरो आधारित जड़त्वीय संदर्भ और एक्सेलेरोमीटर पैकेज, प्रणोदन प्रणाली: 800एन. थ्रॉटलेबल लिक्विड इंजन, 58एन. एटिट्यूड थ्रस्टर्स और थ्रॉटलेबल इंजन कंट्रोल इलेक्ट्रॉनिक्स नौवहन, गाइडेंस एंड कंट्रोल (एन.जी.सी.) पावर्ड डिसेंट ट्रैजेक्टरी डिजाइन और सहयोगी सॉफ्टवेयर तत्व खतरे का पता लगाना और बचाव: लैंडर खतरे का पता लगाना और बचाव कैमरा और प्रसंस्करण एल्गोरिथम लैंडिंग लेग तंत्र, उपर्युक्त उन्नत तकनीकों को पृथ्वी की स्थिति में प्रदर्शित करने के लिए, कई लैंडर विशेष परीक्षणों की योजना बनाई गई है और सफलतापूर्वक संपन्न किए गए हैं।

एकीकृत शीत परीक्षण- परीक्षण प्लेटफॉर्म के रूप में हेलीकॉप्टर का उपयोग करके एकीकृत संवेदक और नौवहन प्रदर्शन परीक्षण का प्रदर्शन एकीकृत हॉट परीक्षण- टॉवर क्रेन का परीक्षण प्लेटफॉर्म के रूप में उपयोग करके संवेदक, एक्चुएटर्स और एन.जी.सी. के साथ बंद लूप प्रदर्शन परीक्षण का प्रदर्शन, लैंडर लेग मैकेनिज्म परफॉरमेंस परीक्षण- एक लूनर सिमुलेंट परीक्षण बेड पर विभिन्न टच डाउन स्थितियों का अनुकरण करता है। इसरो के वैज्ञानिकों द्वारा उपरोक्त सभी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु चंद्रयान-3 की सफलता के लिए हम बधाई और शुभकामनाएं देते हुए गौरवान्वित हैं, सफलता के लिए आशान्वित हैं और देश का गौरव बढ़ेगा, राष्ट्र की ख्याति बढ़ेगी, हम लाभान्वित होंगे ऐसा हमें विश्वास है। **-संपादक**

## मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस स्तम्भ में उन महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ लिखें अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी और भेज दें aryasabha@yahoo.com पर ईमेलं। आप हमें अपनी कहानी और फोटो डाक द्वारा भी भेज सकते हैं। हमारा पता है– **सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

# महर्षि दयानन्द उवाच
## परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

**महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...**

**अधिकारी न बनावेः–** दरिद्र व लोभी को (राजा) प्रारम्भ में बड़ा अधिकार भी न देवें। बिना योग्यता वा परीक्षा के किसी को बड़ा वा छोटा अधिकार न देवें। और कुटुम्ब सम्बन्धी परस्पर मित्रों को भी एक अधिकार में न रखें। **(म. दयानन्द पत्र व्य. पृ. 29)**

**अधिकारियों को अधिक दण्डः–** अपराध में प्रजा से राजपुरुषों पर अधिक दण्ड होना चाहिये। क्योंकि बकरी के प्रमाद रोकने से सिंह का प्रमाद रोकने में अधिक प्रयत्न होना उचित है।

**(म. दयानन्द पत्र व्य. पृ. 29)**

**अधर्म से अनाचारः–** संसार में अन्धकार फैल रहा है, अनेक प्रकार से जनता को धोखा दिया जा रहा है। लोग महन्त बन बनकर मनुष्यों को ठगते और उनका धन हरण करते हैं, कोई कहता है कान बन्द करके अनहद् शब्द सुनो, उसमें सब प्रकार के बाजों के शब्द सुनाई देते हैं। कोई कहता है कि, 'सोऽहम्' आदि स्वर से जपो, फिर जब जीव मरेगा उसी शब्द में समा जाएगा और उसका आवागमन न होगा, कोई कहता है श्वास साधो और एक नथने से श्वास लेकर दूसरे से निकालो, कोई कहता है श्वास को देखो इसमें ही पाँचों तत्व प्रकट हो जाएँगे कोई कहता है यह महन्तजी अन्तर्यामी हैं।

**अनाथः–** अनाथ उसको कहते हैं कि जिसका सामर्थ्य अपने खुद का पालन करने का भी न हो। **(व्यवहारभानु पृ. 21)**

**अनादि पदार्थः–** तीन हैं। एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण, इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं, उनके गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य हैं।

**(स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश पृ. 22)**

**अनाथ के आँसूः–** ऐसा न होवे कि निर्बल अनाथ लोग बलवान और राजपुरुषों से पीड़ित होके रुदन करें और अश्रुपात् भूमि पर गिरे कि जिस से सर्वनाश हो जावे।

**(ऋ. दयानन्द के प. वि. भाग 2 पृ. 755)**

**अनुभव के संस्कारः–** जिसका साक्षात् अनुभव होता है उसी का ज्ञान में संस्कार होता है। संस्कार से स्मरण, स्मरण से इष्ट में प्रवृत्ति और अनिष्ठ से निवृत्ति होती है। **(ऋ. भा. भू. पृ. 38)**

## शोक समाचार

### श्री सुधीर मदान जी का निधन

आर्य समाज कालका जी के पूर्व मंत्री एवं कोषाध्यक्ष श्री सुधीर मदान जी का 16 जुलाई 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 19 जुलाई 2023 को आर्य समाज मन्दिर 1-ब्लाक, दो मंजिला कालका जी नई दिल्ली में संपन्न हुई। जिसमें आर्य समाज एवं क्षेत्रीय अधिकारियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक**

सोमवार 17 जुलाई, 2023 से रविवार 23 जुलाई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 19-20-21 जुलाई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 19 जुलाई, 2023

ओ३म्

200 महर्षि दयानन्द जयन्ती सरस्वती

# दिल्ली में आई भीषण बाढ़

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

## बाढ़ राहत कार्य

बाढ़ पीड़ितों हेतु भोजन की निरंतर व्यवस्था

इस पुण्य कार्य में अपना सहयोग देवें

Account Name : Delhi Arya Pratinidhi Sabha-Donor's Account
Account Number : 910010008984897
IFSC Code : UTIB0002193
Bank : Axis Bank
Branch : Connaught Place, New Delhi

Scan QR Code

कृपया चेक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से ही बनाएं। चेक आपके स्थान से मंगवाने हेतु एवं चेक अथवा ऑनलाइन जमा करके इसी नंबर पर सूचित अवश्य करें।
संपर्क सूत्र: 9540040388

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+

आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल

आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV

अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी

Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

ओ३म्

असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ

# सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता पॉकेट संस्करण

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

Available on
vedicprakashan.com and amazon
bit.ly/vedicprakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह